

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था, मुंबई

हिन्दी 11 पाठ- मीरा

मॉड्यूल 1

पेज-1

मीरा का जन्म राजस्थान में मेड़ता के निकट कुड़की ग्राम के प्रसिद्ध राज परिवार में 1498 ई. में हुआ था। 12 वर्ष की आयु में मीरा का विवाह चित्तौड़ के राजा राणासांगा के पुत्र कुँवर भोजराज के साथ हुआ था। विवाह के 7-8 वर्ष पश्चात ही मीरा विधवा हो गई। माता की मृत्यु तो मीरा में बचपन में ही हो गई थी।

मीरा बाल्यकाल से ही कृष्ण भक्ति में लीन रहती थी, पर पति की मृत्यु के पश्चात तो मीरा ने अपना सारा जीवन कृष्ण भक्ति में लगा दिया। मीरा को तरह-तरह की यातनाएँ दी गईं। मीरा को मेवाड़ छोड़ना पड़ा। वह मथुरा वृंदावन की यात्रा करते हुए द्वारिका पहुँची।

मीरा लौकिक बंधनों से मुक्त होकर निश्चित भाव से साधु संगति व कृष्ण उपासना में अपना समय व्यतीत करने लगी।

मीरा ने लोकलाज और कुल की मर्यादा के नाम पर लगाए गए सामाजिक व वैचारिक बंधन का हमेशा विरोध किया। पर्दा प्रथा का कभी पालन नहीं किया तथा मंदिर में सार्वजनिक रूप से नाचने-गाने में कभी हिचक महसूस नहीं की। मीरा मानती थी कि महापुरुषों के साथ संवाद से ज्ञान प्राप्त होता है और ज्ञान से मुक्ति प्राप्त होती है। अपनी इन मान्यताओं को लेकर वे दृढ़ निश्चयी थीं। निंदा या बंदगी उनको अपने पद से विचलित नहीं कर पाई। जिस पर विश्वास किया उस पर अमल किया। उस युग में जहाँ रूढ़ियों से ग्रस्त समाज का दबदबा था वहाँ मीरा स्त्री मुक्ति की एक ज्योति बनकर उभरी।

मीरा ने मुख्यतः स्फुट पदों की ही रचना की है। उनकी कविता में प्रेम की गंभीर अभिव्यंजना है। उसमें विरह की वेदना है और मिलन का उल्लास भी। मीरा की कविता का प्रधान गुण सादगी और सरलता है। कला का अभाव ही उसकी सबसे बड़ी कला है। उन्होंने मुक्तक गेय पदों की रचना की। मीरा के पदों में उनकी अनुभूति के सहज उच्छ्वास हैं उन्हें अनुमान ही न था कि उनके ये उच्छ्वास पदों के रूप में काल के अक्षय भंडार के रूप में संकलित किए जाएँगे। उन्हें अलंकारों के आवरण में भावों को छिपाने की कोई आवश्यकता नहीं थी। उनका भाव पक्ष इतना सबल है कि कला पक्ष का अभाव उसके नैसर्गिक सौंदर्य को साकार कर देता है। मीरा का काव्य तीव्र भावानुभूति का काव्य है। उसमें भाषा के सजाने-सँवारने की आवश्यकता ही नहीं रह जाती।

मीरा के पदों की भाषा सरल है। उनकी भाषा में राजस्थानी मिश्रित भाजभाषा का प्रयोग मिलता है। कहीं-कहीं गुजराती के शब्द भी आ गए हैं।

मीरा के काव्य में कई जगह अपने आप उपमा, रूपक, अतिशयोक्ति, विरोधाभास आदि अलंकार आ गए हैं। मीरा के पद गीति काव्य का चरम उत्कर्ष हैं। ये पद संगीतज्ञों के कंठहार बने हुए हैं। आज तक सहृदयों को रससिक्त कर रहे हैं।

गीतिकाव्य में मीरा आज भी अप्रतिम है। प्रेमोन्माद, तीव्रता, तन्मयता की त्रिवेणी का पूरा वेग उनकी रचनाओं में परिलक्षित होता है।

यहाँ प्रस्तुत पहले पद में मीरा ने कृष्ण से अपनी अनन्यता व्यक्त की है तथा व्यर्थ के कार्यों में व्यस्त लोगों के प्रति दुख प्रकट किया है।

मीरा कहती है कि इस संसार में श्रीकृष्ण के अतिरिक्त मीरा का अपना कोई नहीं है। जिस श्रीकृष्ण के सिर पर मोर पंख रूपी मुकुट है, वही मेरे पति हैं। मैंने अपने प्रभु को प्राप्त करने के लिए कुल की मान मर्यादा सब कुछ छोड़ दी है। साधु-संतों के पास बैठ कर उनका उपदेश सुनना ही मुझे प्रिय है। इसके लिए मैंने लोक-लज्जा भी छोड़ दी है। मैंने अपने व प्रभु के प्रेम रूपी बेल को अश्रुधारा से सींचा है और यह बेल अब इतनी फैल गई है कि इस पर आनंद रूपी फल उत्पन्न होने लगे हैं। प्रभु के प्रेम में मुझे अत्यधिक आनंद प्राप्त होने लगा है। मैंने दूध का दही बनाकर दही को मथानी से बिलोकर घी निकाल लिया है। घी निकालकर नीचे की छाछ शेष बची है। अर्थात् प्रभु के प्रेम में रमने के कारण मैं प्रभुमय हो चुकी हूँ, मैं सांवरे के रंग में रंग गई हूँ। मैं भगतों अर्थात् सज्जनों को देखकर अत्यंत प्रसन्न होती हूँ। संसार तो नश्वर है, इस संसार में मेरा मन नहीं लगता। मीरा भगवान कृष्ण से कहती है कि हे भगवान! आप मुझे इस संसार रूपी सागर से पार उतारो।

मीरा का कृष्ण-प्रेम अनन्य है। वे स्वयं को कृष्ण प्रेम में पूर्ण रूप से समर्पित कर देती है। उन्होंने राजकुल की मर्यादा के विरुद्ध भक्ति करके अपने युग से संघर्ष किया। प्रस्तुत पद में संसार की निस्सारता प्रकट हुई है। कवयित्री भक्ति को ही सार तत्त्व मानती है और संसार को असार मानती है। मीरा ने विरह की पीड़ा सहकर भक्ति प्राप्त की है। यह पद संगीत लय और मधुरता के कारण मनोरम बन पड़ा है, मीरा अपने पदों को स्वयं गाया करती थी। इस पद में रूपक अलंकार, अन्योक्ति अलंकार तथा अनुप्रास अलंकार का प्रयोग हुआ है। साथ ही पुनरुक्त प्रकाश भी है। कृष्ण के अनेक नामों के कारण काव्य सुंदर बन पड़ा है। जैसे-गिरिधर, गोपाल, लाल आदि। इस पद में भक्ति रस और शांत रस की मिली-जुली अभिव्यक्ति हुई है।

द्वारा-संतोष कुमार खरवाल

प्रशिक्षित स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)

परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय-2, जादुगोड़ा ।